Sahitya Samhita (साहित्य संहिता)
(*Peer Reviewed Hindi Journal*)

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

रविन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन का वर्तमान में उपादेयता एक अध्ययन

Author: Pramod kumar Roy, Ph.D. Scholar.

Singhania University, Jhunjhunu, Rajasthan.

Co-Author: Dr. Shivkant Sharma

Singhania University, Jhunjhunu, Rajasthan.

सार

टैगोर (Tagore) ने शिक्षा शब्द का अर्थ व्यापक अर्थ में लिया है, उन्होंने अपनी पुस्तक 'Personality' में लिखा है- "सर्वोत्तम शिक्षा वही है, जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।" रवींद्रनाथ टैगोर का मानना था कि प्रकृति मानव तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों में परस्पर मेल एवं प्रेम होना चाहिए उन्होंने सच्ची शिक्षा के द्वारा वर्तमान के सभी वस्तुओं में मेल और प्रेम की भावना विकसित करना चाहते थे। टैगोर का विश्वास था कि शिक्षा प्राप्त करते समय बालक को स्वतंत्र वातावरण मिलना परम आवश्यक है। उन्होंने अधिगम में ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग और जीवित परस्थितियों में स्वाभाविक रूप से कार्य करते हुए अधिगम पर विशेष बल दिया । वर्तमान परिस्थितियों में भी उनके द्वारा बताई गई शिक्षण विधियाँ सार्थक सिद्ध होती है / उन्होंने खेल - कूद , समाज - सेवा तथा छात्र स्वशासन को भी पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया । ललित कलाओं और देश विदेश की भाषाओं साहित्य तथा संस्कृति को पाठ्क्रम में स्थान देकर उन्होंने एक और भी बड़ा उपकार किया है । ऐसे पाठ्यक्रम की वर्तमान भारत को भी आवश्यकता है जिससे देश के नागरिकों का बहुआयमी व्यक्तित्व बन सके और वे देशों को प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसित कर सके ।

मूल शब्द : टैगोर, शिक्षा दर्शन, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ आदि ।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

प्रस्तावना

शिक्षा ज्ञान, उचित आचरण, तकनीकी दक्षता, विद्या आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहते हैं। शिक्षा में ज्ञान, उचित आचरण और तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविष्ट हैं। इस प्रकार यह कौशलों व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, नैतिक और सौन्दर्य विषयक के उत्कर्ष पर केंद्रित है।

शिक्षा, समाज एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

टैगोर (Tagore) ने शिक्षा शब्द का अर्थ व्यापक अर्थ में लिया है, उन्होंने अपनी पुस्तक 'Personality' में लिखा है- "सर्वोत्तम शिक्षा वही है, जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।" "The highest Education is that which make's in our life harmony with all existence." सम्पूर्ण दृष्टि से टैगोर का अभिप्राय है संसार की चार और अचर, जड़ और चेतन, सजीव और निर्जीव सभी वस्तुएँ। इन वस्तुओं से हमारे जीवन का सामंजस्य तभी हो सकता है जब हमारी समस्त शक्तियाँ पूर्ण रूप से विकसित होकर, उच्चतम बिन्दु पर पहुँच जायें, इसी को टैगोर ने पूर्ण मनुष्यत्व कहा है। शिक्षा का कार्य है, हमें इस स्थिति में पहुँचाना। इस दृष्टिकोण से टैगोर के अनुसार शिक्षा विकास की प्रक्रिया है। वह मनुष्य का शारीरिक, बौद्धिक, आर्थिक, व्यावसायिक, धार्मिक और आध्यात्मिक विकास करती है। अतः टैगोर के विचार में शिक्षा का रूप अत्यन्त व्यापक है। शिक्षा को व्यापक अर्थ के अन्तर्गत टैगोर ने शिक्षा के प्राचीन भारतीय आदर्श को ध्यान में रखा है। वह आदर्श है-'सा विद्या या विमुक्तये'। इस आदर्श के अनुसार शिक्षा मनुष्य को आध्यात्मिक ज्ञान देकर उसे जीवन एवं मरण से मुक्ति प्रदान करती है। टैगोर ने शिक्षा के इस प्राचीन आदर्श को भी व्यापक रूप दिया है। उनका कहना है कि शिक्षा न केवल आवागमन से वरन् आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और मानसिक दासता से भी मनुष्य को मुक्ति प्रदान करती है। अत: मनुष्य को शिक्षा द्वारा उस ज्ञान का संग्रहण करना चाहिये जो उसके पूर्वजों द्वारा संचित किया जा चुका है, यही सच्ची शिक्षा है। स्वयं टैगोर ने लिखा है-"सच्ची शिक्षा संग्रह किये गये लाभप्रद ज्ञान के प्रत्येक अंग के

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

प्रयोग करने में, उस अंग के वास्तविक स्वरूप को जानने में और जीवन में जीवन के लिये सच्चे आश्रय का निर्माण करने में है।"

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

- **राय , एम . (1986) ने अपने शोधग्रंथ " पंडित मदनमोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का अध्ययन** में उनके शिक्षा के उद्देश्यों , महत्व और प्रकृति का अध्ययन किया और पाया कि पंडित जी के अनुसार विद्यार्थी का जीवन सादा होना चाहिए , विनम्रता विद्यार्थी के लिए आभूषण की तरह है तथा विद्यार्थियों में स्वअनुशासन की भावना विकसित की जानी चाहिये ।
- **आनन्ता शर्मा (2000) ने महात्मा गांधी एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर की शैक्षिक विचारधारा का तुलनात्मक अध्ययन किया** । उन्होंने अपने अध्ययन में दोनो महान विभूतियों के अनुसार शिक्षा के विभिन्न शिक्षा का अर्थ , उद्देश्य , शिक्षण विधि , शिक्षक , विद्यालय तथा शिक्षा के अन्य पक्ष यथा स्त्री शिक्षा तथा व्यवसायिक शिक्षा पर उनके विचारो का वर्णन किया तथा उनका तुलनात्मक विश्लेषण किया जिसमें उन्होंने दोनो के शैक्षिक विचारो में कुछ समानतायें तथा कुछ असमानतायें पायी ।
- **शर्मा , श्रीमती वीना (2009) ने अपने शोधग्रंथ " पं . मदनमोहन मालवीय एवं महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन "** में मालवीय जी तथा गाँधीजी के शिक्षा दर्शनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया तथा शिक्षा के उद्देश्यों , महत्व और प्रकृति के बारे में विचार व्यक्त किये ।

अध्ययन का महत्व

शोध कार्य का योगदान आत्मशिक्षा ही सच्ची शिक्षा है । विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को एकत्र करना शिक्षा नहीं है । शिक्षा का काम मानव के मस्तिष्क एवं शक्तियों का सृजन करना है । सामान्य मस्तिष्क के अतिरिक्त क विशिष्ट मस्तिष्क भी होता है जो जीवन एवं विषयों के परे स्थिति है और जो इस संसार में अपना प्रकाशन करता है । इस विशिष्ट मस्तिष्क की अनुभूति करना कराना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए । रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा सम्बन्धी आदर्श में संकीर्णता के लिए कोई स्थान नहीं था । वे मानव प्रकृति के किसी भी पहलू को दबाने के पक्ष में नहीं थे और यह विश्वास करते थे कि सभी वृत्तियों का सामंजस्य पूर्ण विकास ही व्यक्ति में पूर्णता ला सकता है । शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बुद्धि , भावना और इच्छा शक्ति

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

का समान रूप से विकास करने में सहायक हो और साथ ही जो प्रकृति से सामंजस्य और अध्ययन के विभिन्न विषयों में सन्तुलन पैदा कर सके ।

अध्ययन का उद्देश्य

- टैगोर के शैक्षिक चिंतन (शिक्षा के उद्देश्य) का अध्ययन करना ।
- टैगोर के शैक्षिक चिंतन (पाठ्यक्रम) का अध्ययन करना ।
- टैगोर के शैक्षिक चिंतन (शिक्षण विधि) का अध्ययन करना ।

समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध में टैगोर के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया । यह शोध अध्ययन रविन्द्र नाथ टैगोर द्वारा प्रस्तुत शैक्षिक विचार - शिक्षा के उद्देश्य , पाठ्यक्रम , शिक्षण विधि तक ही सीमित है ।

अध्ययन विधि एवं उपकरण

अनुसंधान का विषय ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है । अतः शोधार्थी अपने अध्ययन में ऐतिहासिक अथवा लेख्य दस्तावेजी प्रमाण विधि , विश्लेषण एवं विवेचन विधि , वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया है । जहाँ तक अरविन्द घोष के जीवन परिचय , कृतित्व एवं शैक्षिक दर्शन को जानने का प्रयत्न है वहाँ पर ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया गया है । मूल्यों की शिक्षा सम्बन्धी विचार का वर्तमान संदर्भ में व्याख्या करते समय वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है ।

तथ्यों का संकलन

तथ्यों के संकलन के लिए रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा लिखित साहित्य तथा अन्य लेखकों के द्वारा रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक चिंतन पर लिखे साहित्य का अध्ययन किया गया ।

रविन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन का अध्ययन

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

रवींद्रनाथ टैगोर का मानना था कि प्रकृति मानव तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों में परस्पर मेल एवं प्रेम होना चाहिए उन्होंने सच्ची शिक्षा के द्वारा वर्तमान के सभी वस्तुओं में मेल और प्रेम की भावना विकसित करना चाहते थे। टैगोर का विश्वास था कि शिक्षा प्राप्त करते समय बालक को स्वतंत्र वातावरण मिलना परम आवश्यक है।

रूसो की भांति टैगोर भी प्रकृति को बालक की शिक्षा को सर्वश्रेष्ठ साधन मानते थे। उन्होंने (टैगोर) लिखा है "प्रकृति के पश्चात बालक को समाजिक व्यवहार की धारा के संपर्क में आना चाहिए।"

टैगोर के शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन करते हुए डॉक्टर एस.बी मुखर्जी ने लिखा है टैगोर आधुनिक भारत में शैक्षिक पुनरुत्थान के सबसे महान पैगंबर थे। उन्होंने अपने देश के सामने शिक्षा के सर्वोच्च आदर्शों को स्थापित करने के लिए निरंतर संघर्ष करते रहे तथा उन्होंने अपनी शिक्षा संस्थाओं में शैक्षिक प्रयोग किए जिन्होंने उनको आदर्श का सजीव प्रतीक बना दिया।

टैगोर के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धांत

टैगोर के शिक्षा दर्शन के सिद्धांत इस प्रकार है:-

- बालक की शिक्षा उसकी मातृ भाषा के माध्यम से होनी चाहिए।
- शिक्षा प्राप्त करते समय बालक को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।
- बालक की रचनात्मक प्रवृत्तियों के विकास के लिए आत्म प्रकाशन का अवसर दिया जाना चाहिए।
- बालक की शिक्षा नागरो से दूर प्रकृति की गोद में होनी चाहिए।
- शिक्षा द्वारा बालक की समस्त शक्तियों का सामंजस्य पूर्ण विकास होनी चाहिए।
- बालक को प्रकृति वातावरण में स्वतंत्रता पूर्वक स्वयं करके सीखने का अवसर मिलना चाहिए।

टैगोर के अनुसार पाठ्यक्रम

टैगोर के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य पूर्ण जीवन की प्राप्ति के लिए मनुष्य का पूर्ण विकास करना। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उन्होंने पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार के अनेक विषयों को शामिल किया है।

विषय: इतिहास, प्रकृति अध्ययन, भूगोल, साहित्य इत्यादि।

क्रियाएं: नाटक, भ्रमण, बागवानी, क्षेत्रीय अध्ययन, प्रयोगशाला कार्य, ड्राइंग, मौलिक रचना इत्यादि।

अतिरिक्त पाठ्यक्रम क्रियाएं: खेलकूद, समाज सेवा, छात्र स्वशासन इत्यादि।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

टैगोर के अनुसार शिक्षण – विधियाँ

टैगोर ने अपनी शिक्षण विधि में निम्नलिखित सिद्धांत इस प्रकार दिए हैं:-

- शिक्षण विधि को बालक की स्वाभाविक, रूचियों, और आवेगो पर आधारित होना चाहिए। शिक्षण विधि में वाद विवाद और प्रश्नोत्तर का प्रयोग करना चाहिए।
- शिक्षण विधि में नृत्य अभिनय दस्तकारी को स्थान मिलनी चाहिए।
- शिक्षण विधि में बालक के अनुभव सौर इंद्रियों का प्रयोग करनी चाहिए।

रविन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन का वर्तमान में उपादेयता

शिक्षा के स्परूप के विषय में रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार बहुत व्यापक है । उनके अनुसार शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य भौतिक प्रतीक करता है तथा आध्यात्मिक पूर्णता की अनुभूति करता है । उनके अनुसार निश्चित शिक्षा के उद्देश्य भी बड़े व्यापक हैं । उन्होंने मनुष्य के शारीरिक , मानसिक , चारित्रिक , नैतिक , सामाजिक एवं वैयक्तिक सभी प्रकार के विकास पर समान बल दिया है । वह शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीय विकास तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की प्राप्ति भी करना चाहते थे | वर्तमान में देखा जाए तो स्कूल पैसा कमाने का (साधन) बन गए है जो कि भौतिक सुविधाओं के दिखावे पर जोर देते हैं वे कहीं न कहीं शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों को भूल जाते है । वर्तमान शिक्षा पद्धति को भी आज रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा उद्देश्यों की आवश्यकता है जिससे कि वर्तमान में दी जाने वाली निरर्थक शिक्षा को सार्थक बनाया जा सके तथा दिशा निदेर्शित बनाया जाए ।

टैगोर के अनुसार शिक्षण विधि -

शिक्षण विधियों के सम्बंध में भी टैगोर के विचार बड़े आधुनिक है । वह परम्परावादी थे परन्तु किसी भी आधुनिक सत्य को अस्वीकार नहीं करते थे । उन्होंने अधिगम में ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग और जीवित परस्थितियों में स्वाभाविक रूप से कार्य करते हुए अधिगम पर विशेष बल दिया । वर्तमान परिस्थितियों में भी उनके द्वारा बताई गई शिक्षण विधियाँ सार्थक सिद्ध होती है |

टैगोर के अनुसार पाठ्यक्रम-

विस्तृत उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उन्होंने विस्तृत पाठ्क्रम का निर्माण किया है । उन्होंने खेल – कूद , समाज – सेवा तथा छात्र स्वशासन को भी पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया ।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

ललित कलाओं और देश विदेश की भाषाओं साहित्य तथा संस्कृति को पाठ्क्रम में स्थान देकर उन्होंने एक और भी बड़ा उपकार किया है । ऐसे पाठ्यक्रम की वर्तमान भारत को भी आवश्यकता है जिससे देश के नागरिकों का बहुआयमी व्यक्तित्व बन सके और वे देशों को प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसित कर सके । परन्तु आज देखा जाता है कि स्कूलों का पाठ्यक्रम ज्यादातर पाठ्यपुस्तकों की पाठ्यवस्तु को पूरा करना ही शिक्षकों का लक्ष्य होता है । ऐसे पाठ्यक्रम में क्रियात्मकता का अभाव है ।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों तथा वर्तमान शिक्षा के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार पूर्णत्व को प्राप्त करना ही शिक्षा का उद्देश्य माना है । उनके अनुसार ज्ञान बाहर से नहीं आता बल्कि वह तो मनुष्य के भीतर ही होता है । इस अन्तर्निहित ज्ञान अथवा पूर्णत्व की अभिव्यक्ति करना शिक्षा है किन्तु हमारी वर्तमान शिक्षा इन उद्देश्य को पूरा नहीं करती क्योंकि इन उद्देश्यों को आधुनिक शिक्षा में सैद्धांतिक रूप से मानयता प्राप्त है व्यवहारिक रूप से नहीं । दुर्भाग्य से आज भी देश के असंख्य नवयुवक स्कूल तथा कॉलेजों में निरूद्देश्य शिक्षा पा रहे हैं । उनका कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है । वे नहीं जानते कि उनके भावी जीवन की योजना क्या है और यह शिक्षा उन्हें उसके लिए तैयार भी कर रही है अथवा नहीं । इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्तमान शिक्षा पद्धति शिक्षा के इस उद्देश्य या लक्ष्य को पूरा नहीं करती पाठ्यक्रम के संबंध में भी रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार विस्तृत है । शिक्षा आयोग ने भी पाठ्यक्रम के निर्माण पर जोर दिया ताकि विद्यार्थी अपनी इच्छा से विषयों को चुने । वर्तमान पाठ्यक्रम विषयवस्तु के रटने पर बल देता है । रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार शैक्षिक पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिससे बच्चे के व्यक्तित्व का प्रत्येक पक्ष विकसित हो सके । शिक्षण विधियों के विषयों में रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने की एक मात्र विधि एकाग्रता है जितनी अधिक - एकाग्रता होगी उतना ही अधिक ज्ञान प्राप्त हो सकेगा । आधुनिक शिक्षा पर भी हम इन विधियों का प्रभाव अवश्य पाते हैं परन्तु शिक्षिण विधियाँ व्याख्यान प्रधान हैं । नैतिक शिक्षा की तरफ सरकार अवश्य कुछ आवश्यक कदम उठा रही है और इसे आवश्यक रूप से स्कूलों में लागू किया जा रहा है । उपरोक्त विवरण के आधार पर रवीन्द्रनाथ टैगोर शिक्षा दर्शन को केवल सैद्धांतिक रूप से मान्यता देना ही काफी नहीं है अपितु व्यवहारिक तौर पर लागू करने की आवश्यकता है तभी हम उनके द्वारा दिए गए विचारों का लाभ उठा पाएंगें

सन्दर्भ सूची

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

1. अय्यर. सी.पी. रामास्वामी - एनी बेसेंट, पब्लिकेशन डिवीज़न, भारत सरकार नई दिल्ली, 1992.

2. राय पारस नाथ- अनुसंधान परिचय लक्ष्मी नारायन अग्रवाल ,आगरा ।

3. एम 0 बी 0 बुच (1991) - फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन , 1983-88 , वाल्यूम -1 (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद , नई दिल्ली)

4. शर्मा ,वीना (2009) - पं 0 मदनमोहन मालवीय एवं महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन : एक विश्लेशणात्मक अध्ययन " ।

5. सिंह ,नवनीत कुमार (2009) - "भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों का शिक्षा में योगदान और उसकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता ।

6. अजीत, ज्ञान कुमारी - सेवा की त्रिवेणी,उ.प्र. पूर्वी रीजन, टी.ओ.एस.इलाहाबाद 2002.

.